डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

एस/ए/पीआर/2018

20 जुलाई 2018

प्रेस विज्ञप्ति

पूर्वोत्तरी समारोह दरअसल 'हेड' और 'हार्ट' के मिलन का उत्सव है – *मनोज श्रीवास्तव*
आम आदमी के प्रवक्ता होते हैं साहित्यकार – *माधव कौशिक*
सभ्य बनाने का काम करता है साहित्य – *गोविंद मिश्र*

साहित्य अकादेमी और भारत भवन के संयुक्त तत्त्वावधान में 'पूर्वोत्तरी' (उत्तर–पूर्वी और उत्तर लेखक सम्मिलन) का आयोजन भारत भवन, भोपाल में दिनांक 14–15 जुलाई 2018 को हुआ। इस कार्यक्रम का उद्घाटन प्रख्यात हिंदी विद्वान और लेखक गोविंद मिश्र ने किया। उन्होंने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि साहित्य हमें आदिमता और निरंकुशता से बाहर लाकर सभ्य बनाने का काम करता है। सच्चा साहित्य ग़लत प्रवृत्तियों और अपसंस्कृति के विरोध में स–तर्क संवेदनशीलता के साथ अपना प्रतिपक्ष दर्ज करता है। गोविंद मिश्र ने कहा कि निरंकुशता का पहला शिकार शिक्षा होती है, इसके बाद मनुष्य की पूरी जीवन प्रणाली असभ्य और बर्बर होने लगती है, इससे अपने स्तर पर बचाने का काम साहित्य करता है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रख्यात असमिया लेखक येसे दरजे थोंगछी ने अपने वक्तव्य में कहा कि पूर्वोत्तर भाषा की दृष्टि से बहुत समृद्ध है। यह समृद्धि तो इस स्तर तक है कि एक–एक कबीले में लगभग तीस–तीस भाषाएँ बोली जाती हैं। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर हर दस किलोमीटर पर भाषा बदल जाती है। येसे दरजे थोंगछी ने उत्तर–पूर्वी क्षेत्रों में हिंदी की उपस्थिति को भी विशेष रूप से रेखांकित किया।

प्रख्यात संस्कृति चिंतक, साहित्यकार एवं मध्यप्रदेश शासन के संस्कृति विभाग में अपर मुख्य सचिव मनोज श्रीवास्तव ने विशिष्ट अतिथि के रूप में कहा कि पूर्वोत्तर वास्तुपुरुष का मस्तक है। यह क्षेत्र भारत के वास्तव का शीर्ष बिंदु है। मनोज श्रीवास्तव ने कहा कि कला का पड़ोस 'हारमनी' से पनपता है। पूरे विश्व में यदि आप भाषिक विविधता की ओर ध्यान दें तो भारत भाषाओं का संग्रहालय है। उन्होंने इस बात की ओर विशेष रूप से ध्यान दिलाया कि पूर्वोत्तर के विभिन्न क्षेत्रों के नाम बहुत काव्यात्मक हैं, जैसे– त्रिपुरा, मेघालय, अरुणाचल आदि। उन्होंने साहित्य अकादेमी को इस कार्यक्रम के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि पूर्वोत्तरी का समारोह दरअसल 'हेड' और 'हार्ट' के मिलन का उत्सव है।

साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष एवं प्रख्यात साहित्यकार माधव कौशिक ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि भाषाएँ व्यक्ति और व्यक्ति के बीच में बाधक नहीं होतीं बल्कि सेतु का काम करती हैं। हमारी भाषाओं की शक्ति अब पूरी दुनिया स्वीकार कर रही है। भाषाओं में अब सीमांकन नहीं है बल्कि सभी एक दूसरे से शब्द लेती हैं। ये विस्तार बहुत महत्त्वपूर्ण है। व्यक्तियों के बीच के सेतु को साहित्य और मज़बूत बनाता है। हमें अपने देश की इस विशाल परंपरा और संस्कृति को पहचानना ज़रूरी है। उन्होंने सभी साहित्यकारों को संबोधित करते हुए कहा कि साहित्यकार आम आदमी के प्रवक्ता और अघोषित अग्रदूत होते हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि दो दिन के इस समारोह में विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृतियों, भाषाओं और उनके साहित्यों से आपस का परिचय तथा संवाद और प्रगाढ़ हो सकेगा।

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in

कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के संपादक अनुपम तिवारी सभी आमंत्रित साहित्यकारों एवं विद्वानों का स्वागत किया। भारत भवन के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी प्रेमशंकर शुक्ल ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि करुणा ही पहला प्रतिपक्ष है, इसके साक्ष्य हमारे प्राचीन साहित्य में मिलते हैं।

इसके बाद पहला सत्र कविता–पाठ का था, जिसकी अध्यक्षता उर्दू के मशहूर शायर मदन मोहन दानिश ने की। इस सत्र में शिवशंकर मिश्र 'सरस' (बघेली), उत्तरा चकमा (चकमा), कैरासिंह बांदिया (हो), अजिता त्रिपुरा देबवर्मा (कोकबरॉक), सत्येंद्र कुमार झा (मैथिली), शिव चौरसिया (मालवी), भाम थापा (नेपाली), तुलसीदास परौहा (संस्कृत), गणेश ठाकुर हांसदा (संताली) ने अपनी एक कविता अपनी मूल भाषा में तथा अन्य कविताएँ हिंदी या अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रस्तुत कीं।

दूसरा सत्र 'मेरी रचना मेरा संसार' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता हिंदी के प्रख्यात कथाकार कवि एवं विद्वान रमेशचंद्र शाह ने की। इस सत्र में फेमलिन के. मरक (गारो), मजीद मजाजी (कश्मीरी), दिलीप मायेङबम (मणिपुरी), श्रीराम परिहार (हिंदी) तथा बुलाकी शर्मा (राजस्थानी) ने अपने सुविचारित आलेख प्रस्तुत किए। उन्होंने अपने आलेखों में अपनी रचना–प्रक्रिया तथा अपने रचनात्मक अनुभवों को व्यक्त किया।

दूसरा दिन

दिनांक 15 जुलाई 2018 को आयोजित तृतीय सत्र कहानी–पाठ का था, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी कथाकार मंज़ूर एहतेशाम ने की। इस सत्र में कुमुद कुमार दत्ता (असमिया), तपन बंद्योपाध्याय (बाङ्ला), हरि भटनागर (हिंदी) और बलदेव सिंह धालीवाल (पंजाबी) ने अपनी कहानियों का कुछ हिस्सा मूल भाषा में प्रस्तुत किया तथा बाद में कहानी का हिंदी या अंग्रेजी अनुवाद पेश किया।

'समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियाँ' विषयक चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता बोडो भाषा के प्रख्यात साहित्यकार अनिल ब'र ने की। इस सत्र में भगवानदास मोरवाल (हिंदी), टी.बी. चंद्र सुब्बा (नेपाली) और रवि रविंदर (पंजाबी) ने अपनी–अपनी भाषाओं के साहित्य ने मौजूदा समय में प्रचलित प्रवृत्तियों को रेखांकित किया।

पंचम सत्र कविता–पाठ का था, जिसकी अध्यक्षता फेमलिन के. मरक ने की। इस सत्र में लोहित बोरा (असमिया), भारतेंदु मिश्र (अवधी), प्रकाश उदय (भोजपुरी), देबकांत रामचियारी (बोडो), गीत चतुर्वेदी (हिंदी), ऑन तेरॉन (कार्बी), एन.टी. लेप्चा (लेप्चा) और मदन मोहन दानिश (उर्दू) ने अपनी एक कविता अपनी मूल भाषा में तथा अन्य कविताएँ हिंदी या अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रस्तुत कीं।

कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक अनुपम तिवारी ने किया। कार्यक्रम के अंत में उन्होंने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में दोनों दिन भोपाल तथा आसपास के क्षेत्रों से आए हुए साहित्यप्रेमियों और छात्रों के भारी संख्या में उपस्थिति रही।

(के. श्रीनिवासराव)

डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

एस/ए/पीआर/2018

20 जुलाई 2018

'लोक : विविध स्वर' के अंतर्गत हाथरस घराने की नौटंकी का हुआ आयोजन

साहित्य अकादेमी तथा भारत भवन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 14 जुलाई 2018 को सायं 5.00 बजे **'लोक : विविध स्वर'** कार्यक्रम के अंतर्गत कृष्णा कला केंद्र, उत्तर प्रदेश द्वारा हाथरस घराने की नौटंकी प्रस्तुत की गई। कृष्णा कला केंद्र की निर्देशक तथा प्रसिद्ध नौटंकी कृष्णा कुमारी ने मनमोहक प्रस्तुति से सभी को भावविभोर कर दिया। उन्होंने अपने साथियों के साथ विभिन्न नौटंकियों की झलकियाँ प्रस्तुत कीं। कलाकार कृष्णा कुमारी ने 'अमर सिंह राठौड़', 'भक्त पूरनमल' और 'हरिश्चंद्र–तारामती' नौटंकी के प्रसंग प्रस्तुत किए। उन्होंने बताया कि नौटंकी में कानपुर और हाथरस शैली में काफी अंतर है। लगभग डेढ़ घंटे तक चले इस कार्यक्रम में साथी कलाकार प्रकाश सिसोदिया ने कृष्णा कुमारी के साथ नौटंकी के विभिन्न प्रसंगों में साथ दिया तथा हारमोनियम पर देवी सिंह, नगाड़े पर छिद्दालाल तथा ढोलक पर रवि शंकर नागर ने उनकी संगत की। इस कार्यक्रम में कृष्णाकुमारी के जीवन पर 'सुर बंजारन' शीर्षक से प्रकाशित उपन्यास के लेखक भगवानदास मोरवाल ने अपने शोध आलेख में कृष्णा कुमारी के जीवन के स्वर्णिम दिनों को याद करते हुए कहा कि कृष्णा जी की नौटंकी देखने के लिए एक–एक लाख लोग आया करते थे। उन्होंने हाथरस घराना शैली की नौटंकी की ख़ूबियों के बारे में कृष्णा कुमारी से कई रोचक सवाल पूछे जिनका उनका उन्होंने समुचित उत्तर दिया। कृष्णा कुमारी ने साहित्य अकादेमी और भारत भवन को धन्यवाद देते हुए कहा कि ऐसे प्रयास सराहनीय हैं। ऐसे प्रयासों के द्वारा ही नौटंकी की कमज़ोर पड़ती विधा को बल और संरक्षण प्राप्त हो सकता है। इस सांस्कृतिक प्रस्तुति को सभी श्रोताओं और दर्शकों ने बहुत पसंद किया और कहा कि यह प्रस्तुति ऐतिहासिक महत्त्व की है।

(के. श्रीनिवासराव)

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in